श्री नैन सत्य प्रकाश

पृष्ठ १  अंक १२

तंत्री: शाह भीमनलाल गोकणदास
અમલ વર્ષીએ માંક ઈન્યાજ પ્રધાને પણ "શ્રી જી સત્ય પ્રકાશ" પરથે સુનિર્દિષ્ટને બેઠ સેક્ટરોમાં આશ્રી. સાથેથી પદ્ધતિ સુનિર્દિષ્ટે પણ અંત્રામાં લગ્ની જાહેરાત કરવી લેખા અંદર ગીતદાને ન ગાવ.

સુયુનાત

ગાંધીઓ ઉદ્ધવો, પુનઃવસાદ સુનિર્દિષ્ટ શૈક્ષનિવૃતિ મહારાજને "નિવારણ વાણી કેસા બેં" શેષ શેષ આ અંદર આપી શકાશો

નથી. તે આવશય અંદર આવાસાં આવેશેનું.


श्री जैन सत्य प्रकाश

पुस्तक १

अक्ष १२

अण्णामाहेश्वरसुति चण्डीवर विस्मय, अग्रवे वन्दे तेशामसूर्य द्राक्षे विनिधुर॥
सोद तिन्यासस्मायविषये चे बेदहिलामा तथा, वाज्जा पवरं परिधज्ञण सच्चारण सुया ॥ २ ॥


लेखनंस्ति आलिंसा

लेखनंस्ति “आलिसा परमो धर्मं”, ना उद्धर सिद्धांत साधकाहरे है जने वस्तुवर्गदिसंभा धर्मी पृथकुरिंसा आदरख अंश भर छ। पूर्ण कमान महागाम नामक साधक अस्वर्य पुष्करणी हिंसा विरुध्द तेत्र जनव्र मायद प्राचीन निःसारतं काल अने शीता अर्थात सत्यवाक्यी मणी आदान छ। प्राचीनाहरु आने आ धार हिंसाधिः सुखै हो जनो यथा लेखनस्ति।

आलिसास्ति सिद्धांत लेखनंस्ति मारळाणीही न क छ होने आ तरने सामनानी आधीनात्त्व कार्यो अीद्ध चोलाना जीवी अत्याचारीयोना श्रृंखला सर्वसाधारण ठर गोष्ट छ।

प्राचीन काल अने विपुलंस्ति मांसकाल अने महसीलपण अन्व यथार्थ छ जो पाण लेखनस्ति जल अताप कर।

-५१० बी.स. विलक
अनेकार्थक-श्री केसरिया स्तोत्रम्

कर्ता—अचार्य महाराज श्रीविजयपवस्यिजी

(गतांकर्षी पुष्प)

॥ आचार्यश्रमु॥

श्री शीवङ्गमसो-विष्णुसरत्वं चेव न बिरेवो॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २१ ॥
नवभमणे दोसेयण-हुज्जा ण गुणोत्संचार घरया॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २२ ॥
परमेश्वरात्मानि-कल्यण सिद्धा गुणा विक्षमेति॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २३ ॥
अन्नमाने घरयं-हिन्ददोसारकरण तुहंय॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २४ ॥
पिशाचारं वर्षसयं-चित्रविनिभिभिपरिष्ठव॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २५ ॥
इह श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
इह आस्तिहाना-अचार्यश्रमु॥ किंद्रम्याम्बोधे-कुजाम हुण्डपि परिहारेः॥ २६ ॥
हेज अरहि-ही दोसे चो किमपि वत्तुवोऽणेः॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरिया पहुं बंदे ॥ २७ ॥
परिवारावो हेः-ध्यानीसत्चिंचिचिंचिमलोऽ॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २८ ॥
प्रायोधसो हुण्डाणा-कुजाम हुण्डपि परिहारेः॥ २६ ॥
मायामोसो मुहुणा-कुजाम हुण्डाणा-कुजाम हुण्डपि परिहारेः॥ २६ ॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ २९ ॥
अभिग्रहे भुजदुहं-सच्छासत्प्रवर्षण सया हेः॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ ३० ॥
पार्वत्यां धनार्धाः-यह अविमान सस्पेषि हुयांहै॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ ३१ ॥
हुण्डाणामाहारं-किंचि गुणवारणामाहारं हुज्जा॥
इह सिक्षा जस्स मुहा-तं केसरियापहुं बंदे ॥ ३२ ॥
श्री महाविंशी कांडः संपूर्णतम्

समस्तं भव्यमेवं-प्रवाहितजीवपरिणामोऽ\\nइय सिक्षिवा जनस्य सहा-तं केसरियापहुँचं बंधे \ 32
मोहनरोहं नान्यं-विरहं मुक्तिमन्नरं धिरिणं
इय सिक्षिवा जनस्य सहा-तं केसरियापहुँचं बंधे \ 34
संतियकमक्षारं-चारिकं दृष्ट्यानावन्धौर्यं
इय सिक्षिवा जनस्य सहा-तं केसरियापहुँचं बंधे \ 35
सद्रावोहरवरणं-समुखं मीठं सवर्पणं
इय सिक्षिवा जनस्य सहा-तं केसरियापहुँचं बंधे \ 36

उपजातिस्तम्भं

अणंतरनिणायणं विमोहं
मोहजियाह्यसंरणं \ 37
आवस्त्रणवंगवणिरिणं
सरोमि तं केसरियारिणं \ 38
तव पशाय गच्चति गच्चति।
क्या चिन्हं नुजल गयियग्यीडा।

ण सीर्वैरांरिमक्ष्ममी।
झाणारविवंधवा सबूत्तवंडुंड़ी \ 39
धूयापरी पुज्ञपरी कलंति।
भेदे भीं बुज्जा समाघ्रंहो।

जमं क्यो ! सर्पिमसर्वझं वसें।
इण्यामि परं परं सर्वमुहार्दे \ 40

स्वास्तिकतस्तमं

एवं केसरियामुर्तित्यपहुँचं भव्यश्रणं मेवा।
सिक्षुतत्तमुपेहरिः राजणयाये जाओ भो नाशाम।
जुले जुम्मानिवणंन्दसिनं संवर्चये हिन्दे।
वेसाहे संयपकश्ववल्लङ्गवेहे पुणण किर्री पन्तुया। \ 41

आस्मातस्तमं

सिरि केसरियापुरुंज-गुर्जरसिरिणमस्य रसिस्तमं
पव्यायारिपणं-निविर्दियं भवणंभयं। \ 42
भणास्त्रूणांभणामावा-महहे संवसं संपया बुज्जी।
आस्मातितिकित्व-इतदद्भुतं तद्हुज हृदयिन्यायं। \ 43

For Private And Personal Use Only
અને નષ્ટ માં કેનં જીવન નીચે લિખેલ હતી. નિશ્ચિત અને નિશ્ચિતત્વપૂર્વક માને હતી કે, જે નીચે લિખેલ હતી કે અંતિકાતરિક ને હોવા છતા પરિશ્રમ (પર્યાવરણ) વાધી આપેલી અપેક્ષા છે કે, અને તેથી યા સમાવેશ ક્ષેત્રમાં સમ્પૂર્ણાંકન-સામગ્રીને જાણાવાની માતૃપ્રગઢી ઓછું કાચું સમયોગથી સામ્રાજ્ય કે મોટી સમય (એલા) સત્તમ તથા અપની આધારભૂત ક્ષેત્ર છે, અને સાથે સાથે તે સમાનતા સુધીની મનોગતા, તીનકા અને તીન- તમતમાત્મક હેલાંડી થી છે. કારણે હેલાંડી અને તેના લઈને તેની હેલાંડી છે. તેથી પરિશ્રમયુકત વાસ્ત્રમાં મંડલપૂર્વક, મધ્યોધ્યપૂર્વક અને તેમના હોવાથી તેને જાણવાની તરીકે રહેશે છે. પણ ભાષા સાધનાથી તમ લેવાને તેની ક્ષમતા કેટલી માંગ કેટલી માંગ છે. કારણ છે કે ના ભાષા સાહેબી તાળખા માટ કાચું તો તેનું ક્ષમતા તો વેદાંતા દે હિંગાર કે આભાસી કે આભાસી હોય છે, પણ ભાષા સાહેબની તાળેમાં કે મંડલપૂર્વક કે હોવાથી તેની ક્ષમતા કેટલી.
हिंदुमार्गी ज्ञानिति  

स्वीकार किया जाना तेस्रे श्री महाविद्या ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान। केवल चारों हिंदुमार्गी के ज्ञान का साधन तथा प्राप्ति का विषयक ज्ञान।
श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र

श्री महाविर जैन अराधना केन्द्र
निःशुलिका इतिहास

कही पछताऀीर्ष्णाँना भेट्ठूँ नौर मारणार नवू न नाथी. कनारे शीश तरक बाळ बोइँ जी सोनियी करणं लोकपूर्व आधिमाकाकालीय नामां घमन साहारी होते के ने करूं धार्मिकमंत्रां जेक जे अने हेतु वश्यामाने आरतिने. नाथ कवारून न जेते. इत्य विवाह जर्णी के द्वारिकाभरे ने नामकरण नापणा आधुतिकर्मांना दुर्दशी याच हे ते ते आरतिने राजे अने सार्थेक जे आर्यनी-सुवीकाकालीय नामां धार्मिकर्मांमध्ये दुर्मिळी याच हे ते आरतिने ने राजे यो या तन्त्रांग गणे उत्तरी राखी?

जेटली आ प्रमाणे लिंग शापने. वेळ आर्य कर्म छाता द्वारिके के सार्थेकांना लिंगां विकर्षण नाथी घटतो. इतर अवेकांगे. भाने छे ते प्रामाण्य इत्यन्तमाने देवपूर्व लिंग समस्तां अने आध्यात्मिकी भस्मुप्रहुतान्याच समस्तां अने पची लाग विंगां (पश्चिमातुचा अर्धवाळ) उपैक्षिकता. भावी अने दोष विंगां मान्यावताता आवर दोष विंगांमध्ये विज्ञानिकस्थतांना घटाने.

वनी या पत्र प्राचे अन्तर न करू अन्तरही हे आरतिने अने कस्तूरवासां आवता. आ लॅंग-लिंग आधिना विकेचे आत्मिकस्थतातली माणु-महानाथी माफ़े हे. अने जे सामाजिक-शाळी ते आले वर्तने व सामग्री शके जेती की वात दीनायी जेती हे के लॅंग-लिंगांना विकेचे. पत्र आधारां व सामस्तां व, अती विकेचेचे व सामस्तां विकेचे. भावां विकेचेचे सामग्री शकावा होय तो माते मानेता आता विज्ञानिकी बांधव शी रहेवे?

(अपूर्वी)

सूचना

१० मा अक्षरां, पृष ३२ मा "श्री निलमातिरि" ना लेखनी १४ तथा १८ मा वर्षांतील, "उत्तरायणस्त, अभ्यस्त ३५, गाथा ४४" चपांत छें तेया.

१० वें अंक म, पृष्ठ ३४६ मा "दिगंबर शाख काळे बने!" शाहीक लेख की १६ वी पंक्ती म "भानुद खुक्ला ५" के स्थान पर "मोह खुक्ला ५" समाधना.

११ वें अंक म, पृष्ठ ३६६ मा "दिगंबर शाख काळे बने!" शाहीक लेख के प्रश्नांक ६ की आदीय पंक्ति म "गुणसेनजी" के स्थान पर "गुणधरजी" समाधना.
साधु आहारपान कितने वार करे?

लेखक के द्विगीत एकवार मोजन करते जोहें, तेमां प्रावनसारी साल्मू भाभाय पूर्वकारन करते तेनी मूल गाथा प्रमाणकरूण आपके हैं ते फण असामान है । लेखक के लेखकेद गाथानी नकल—

कुकुडिअंडैस्यैति कथा वतीस भोजनप्रमाणे।
राण्या सार्वसारं कर्षण स चिर्विताः।७४२॥

प्रथम तो आ गाथा ७४२ मी लेखते हैं परतु ७३५ मी बोध बोध हैं। अने छुड़ गाथा नोचे प्रमाणे जीवियां आठ हैं ।

कुकुडिअंडैस्यैति कथा वतीस भोजनप्रमाणे।
राण्या सार्वसारं कर्षण स चिर्विताः।७३५॥

कुकुडिअंडैस्यैति कथा वतीस भोजनप्रमाणे।
राण्या सार्वसारं कर्षण स चिर्विताः।७३५॥

लेखक वर गाथानी अर्थ नोचे प्रमाणे लेखते हैं—

“कुकुडी पाठ (मुगी) के अंडेके कथा कथा प्रमाणवाले २२ वर्ष पास (कीर) मुगीके भोजनका प्रमाण है। साधु यदि इससे अधिक भोजन के तो दोष और यदि इससे कम भोजन करे तो मुगा होता है।”

आ तो तहन सामाय अर्थ जानकेल है, पण ख्या सहस्य लेखक जनावी जानकेल नस्तिः। जो उपर्युक्त ज अर्थ कहार मानते तो बाल साधु अने खुदान साठु बनेन आहार सम्बन्ध बोध समिति, अने बाल साठु उपर्युक्त प्रमाणवाला कथा कथा साथ तो तेने प्रमाणवालिक आहार है ते फण प्रमाणवालिक नहीं कही शाहार अने तेही प्रमाणवालिको दोष लागू पड़ि शकें नहीं। तथा तर्क व्यवहारामें पण कोई सम्ब जान्याचिकाच गौर दे, कोई वर्तन्त तेज जान्याचिकाच गौर दे, कोई बोध तेजी समस्म जान्याचिकाच गौर दे, तेंद्र ज्ञान भुज्यो मूनियांमा पण तत्तता है उल्लां देखने सरको ज आहार
थई जाती ध्रुव धर्मविद्या नहीं थई शाक्ति अने “टके होर भाषी, टके होर खाजा” जेवँ थई जस्थः, माते आतो सहस्रभूत कोई अर्थ करें भरे, ते आ प्रमाणे हे।—

कुड़की वे ग्रामार्थी हे। एक हृदय कुड़की अने बीजी भाव कुड़की। तेमा हृदय कुड़की ते साजुँ शारीर समझतुँ, अने साजुँ मोडूँ ते इंदु समझतुँ। तेमा आंसुँ, गाल, होठ अने भुक्तिहो विकार न थाय तेही फिक्षित जे कठब मोडूँ मुक्ती शाकाय ते कुरुक्षेत्रक्रमण कहेहाय छे, अनाता जे कठब मोडूँ मुक्तां आंसो पाँड़े, भारे उंघ नचावना न पडें, गाल विशेष पहाड़ा करता न पडें, होठ विशेष पहाड़ा न करता पडें ते कुरुक्षेत्रक्रमण कठब कहेहाय छे। आयो अर्थ कराराथी बाल अने युवान मृणिना कवलमाघणा पाणि फरक पड़ी जसे अने अने व्यवस्थित आहार शेहे। बाल मृणि प्रमाणातिक आहार वईं शक्तो नहीं।

अथथा मध्यम वचने आश्रीने बीजी रोजे पाण अर्थ थाय छे के कुड़की प्रदेश कुड़की नामानुँ पाणी, तेना इंदा प्रमाण जे कठब ते कुरुक्षेत्रक्रमण कठब कहेहाय छे। आ अर्थ मध्यम वचने आश्रीने सामान्य रोजे घटी शके के, परंतु मध्यम वचना पाण जण भागा पड़े। कोई मन्द जगासन्तिवाजा होय छे, कोई मन्द जगासन्तिवाजा होय छे, अन्यते तेज जगासन्तिवाजा होय हे। अने कोई मध्यम—जोही तेजी जगासन्तिवाजा होय हे।—

तेमा प्रथम जे मन्द जगासन्तिवाजा वतन्या तेने तो तेतो आहार नहीं पची शक्तो शाकाये ते प्रमाणातिक थई जसे, अवयत तेज जगासन्तिवाजा तेतो आहार लागी पड़े अने तेनाथी श्रुणानी लाभति थई शक्तो नहीं। अनाता जे श्रुणानी लाभति माते आहार लेवाने हे के माते आहार लेवाने हे अने साध्य सात्ती शाकाये नहीं, माते आ उपयुक्त वने माते कोई विशेष अर्थ करो रहे, ते आ प्रमाणे के अर्थो भाव कुड़का। लेबानी हे। जेजो आहार खाषाथी कदा शाती न रहे तेही जे दुः खुशी न जाय अने विविध प्रकाराथी प्रूणी पंदा थाय तथा जाननाथ,रीति निःसात्ती गोरे गुणानी खुदत थाय तेतो प्रमाणवाजो जे आहार ते भाव कुड़की कहेहाय छे, अने तेना वर्मिलाई जे भाम ते इंदु कवलामाघणा अने हे। आया प्रकाराथी जे आहार ते बृत्ता कवलक्रमण कहेहाय हे। आ अर्थी अभाइ, मन्दजगासन्तिवाजा, अवयत तेज जगासन्तिवाजा, व्यवस्थित जगासन्तिवाजा तथा बृद्ध कोरनी सुत्र रोले व्यवस्थित जानवाउँ रहे हे। आया कवल कतिमा गुमुखणे, २ अने, २५ नर्सकसे होय हे। आया अर्थी गुणात्मक भाब केवल भातानार परथी कवली मेट्टीशी शाकाय अथारत हे।

कतिमा आ बारात वारोत शाली तो मुखिणो आहारानुँ प्रमाण बृत्ती कवल छे तेतो ज आहार छे पाण एक द जार साजुँ ते बोल आती शाको निधी। आ बृत्ती कवलना प्रमाणाथी चार वार आठ आठ कवल थाय तो चार वसत पाण आहार समझी शके हे, दस के अगीयार कवल थाय तो जण। वसत
| पण आधार सम्वी शके हे, वे कस्त सोज सोज कस्त खाय तो वे कस्त पण सम्बी शके हे, अने एक कस्ते कस्तीख साथ तो एक कस्त पण आधार सम्बी शके हे। माटे आ वास्ते एक कस्त स्वाभाविक प्रमाणमाण आप्सु ते बीखुदु उठित नयी।

कदाच एस कहो के नोचेनी अनौ गाथरमाणी ते अर्थ निकलो होइ तो ते पग क्रोड़ी हे। पाठवरी अनौ गाथरी अर्थ आ रामाणे हे—“रुगा बडे करोने आधार दर्जा मुनि पोताना चारित्रके अमात्यमतवाणू क्रे हे।”

आ कंठिश कस्त प्रमाण जे आधार बलवानाएँ आनेल हे ते पग अतिध आधारनु पाँच नहि भवानी हाडा, वसन बरगोनी वयाथी अने ग्रुंदु कोरीने दर्जणे न श्रुंदु पंडे तेने माटे हे, जेने माटे आ प्रमाणे कहे हे:—

अहिस्तु बाहुल्यो वहो प्रमाणाग्रे भोयणु मुत।
हामिर व बामिज व मरिज व ते अर्जीसंत
[[ 1 1 ]]

[ अतिवंकसमिवसहुःकंतप्रमाणेन भोजने मुकः।
हांसेस्वा बामेस्वरा मारेस्वा तत्सूरुणमागमु]
[[ 2 1 ]]

माटे प्राचनसारोदारना पाठवरी उपर बलाथा प्रमाणे अर्थ अने शहुस्व होवाथी तेने कल्पसुण्य कानुवरी साथी कोई पण जातो विरोध घे ज नह। प्राचनसारोदारने पाठवरी कानुवरी प्रमाण बलाथे हे, अने कल्पसुण्य कानुवरी पाठ टकलु प्रमाण बलाथे हे। आ वरी प्राचनाएँ पाठवरी विरोध बलाथानारी वुस्ती अने अभिज्ञानारी विरोध प्रदर्शित घात हे।

बहु लेखके कल्पसुण्याचे भारतमात आळीने अनेक प्रकाराचे वुस्ती उठाया हे, तेना उपर विचार करता पहेलं कल्पसुण्याते गायत्री लो अने हे विचारावर जेथे ते वरसू तेलांकुंडी समृद्ध शाकते—

“वासावासेपर्योजनियस निर्माणितस्य मिस्त्रस्य कवियं एवं गोरक्षानां सातासां मताणा वा पाणाणा वा निरस्त्राणा वा पश्चिमाणाः वा गदस्ताणामैत्रेयाचनाणा वा उवक्षस्यशाबाजना वा तत्सेववेयाचनाणा वा गंगायात्रेयाचनाणा वा कुरणाणा वा तथीहाणा वा अर्यं जात्याणाणा वा। 20।।

वासावासेपर्योजनियस चउत्तमबन्धितस्य मिस्त्रस्य अर्थ पुश्करं किस्से, जे से पाठवरी निकलक हुआमें विघोषे भुवा। पिंचा पाणिग्रहं सांतिहय संस्पर्शित लिखित। यसंध्य संरक्षा करिये तथिळते तेजक भाषणे प्रोजेक्टाच, से ये नौ संरक्षा एवंे से कवि पुराणे शाहाते करिये तथापि प्राप्त वा पाणाणा वा निकलस्त्राणा वा पश्चिमाणाः वा। 2 1।।

वासावासेपर्योजनियस भट्टमंदिरस्य मिस्त्रस्य करिये लो गोरक्षानां सातासां मताणा बाल वा पाणाणा वा निकलस्त्राणा वा पश्चिमाणा वा। 2 1।।

वासावासेपर्योजनियस अदुमरमंदिरस्य मिस्त्रस्य करिये तथो गोरक्षानां सातासां मताणा बाल वा पाणाणा वा निकलस्त्राणा वा पश्चिमाणा वा। 2 1।।

वासावासेपर्योजनियस प्रोजेक्टस्य विचित्रमंदिरस्य मिस्त्रस्य करिये
भाषाय साभारूण—चोमांू रोहिला एवा नियष एकाश्वरूण करराज मुनिने एकासार गृहस्थने

एके मात पाणी माते जेवु आवलू करते छे, परंतु आकासार तथा तेमनी वेयावलू करनां, उपाय तथा तेमनी वेयावलू करनां, तपस्वी तथा तेमनी वेयावलू करनां, बिमारता तथा
तेती वेयावलू करनां अने जेते वात नभी आया एवा नाना सालु साली सिंहास्यांमा आ
वात समजले अपार—एक वबली विवृवृ न

चोमांू रोहिला एवा एकासारे उपवास करनां मुनिनी वातहूं आ आतली वात
विशेष जाणवै—के एकासारे उपवास करनां
ते मुनि ससारां गोचरी जहूँ फासुक भाल
पाणी लाहे अने तेंते खाई पीने पाताले चोकासा चिनाणा—साफ करे, ल्यान वात निवृह
चाली रक्तद बाणी को ते खोचला भोजनवरे
करने जा दिवसे चलाचै के, अने कटाच
निवृह न चाली शके तो बीजी वार फण
गृहस्थनेचे वेव मात पाणी माटे जेवु आवलू
तेने करते छे।

चोमांू रोहिला एवा एकासारे छठ करनां
मुनिने वे बार गृहस्थनेवे वेव मात जेवु आवलू करते छे।

चोमांू रोहिला एवा एकासारे अथम
करनां मुनिने त्राण वे गृहस्थनेचे वेव मात
पाणी माटे जेवु आवलू करते छे।

चोमांू रोहिला एवा एकासारे विषय तप
करनां, अधिक अवसरी तप करनां
मुनिने जेतली वसव इवा थाय तेतली वसव
गृहस्थनेचे वेव गोचरी पाणी माटे जेवु आवलू
करते छे।
श्री महाविर जैन अर्धांना केंद्र
श्रीमहाविर जैन अर्धांना केंद्र
श्रीमहाविर जैन अर्धांना केंद्र
श्रीमहाविर जैन अर्धांना केंद्र

आचार्य श्री किल्लासगर सुरी ग्यानमंदिर
आचार्य श्री किल्लासगर सुरी ग्यानमंदिर
आचार्य श्री किल्लासगर सुरी ग्यानमंदिर
आचार्य श्री किल्लासगर सुरी ग्यानमंदिर

(तत्त्वज्ञानी आचार्य)

आज—आपनी ज्ञानत्व सूत्रि
माननी व जेतने अपने पाते हुए आर्य
विशेषतः छ। पशु करि आप निदाना प्रभावकृती गो पाते सिद्ध करि अतने, केम वेदां मां कसण कार विशेष क्षेत्र।

अंद—है, तथा नाम भ्रान्त हक्कने संबंधे, असुवर्णना १६ मा अवधारणा
जिस नामात पायले से है—

याते रूप सिंहा तत्त्वार्थपापकाली।

अर्थः—कृपया! तारं श्रीराम कह्याचूं
कर्यायारां, सीम्य ग्याणे पुष्पवस्तु आपाता
पाय।

यणुर्भिना सीना अवधारणा ६ है।
मंत्रमां आ प्रामाण्य कार्य छः।—
व्यक्तकर्म ज्ञाताहे, सूचना पुढरिले।

उवीक्षितकी वचनानु गृहीतकी क्षेत्रामात्र।।

तथा च निहाकमू, खं १३, पाढो ४ खण्डः

जीति अन्वयकानि यथाविवको सहसे
स्त्रुत तथाकर्म ज्ञाताहे, (सूचनि) सुपुष्पिनिमु, (पुढरिले) पुढरिले विवको फाले
कथ्यारामात्र गृहीते वाचे: सकाशाचुशक मां कक्षारिक्रमादीचारणा पारा सृजती।

अर्थः—या सेतु करिधरे गो शाल्य कार्य छ। गोनां सीने अर्थ ते।

यो छ के वाचे नेत्रात्वा—विवकोनी
कने पूल करिधरे चीये, सूचनि,
पुढरिले, पाढो लघुत्वा तथा ज्ञानी
कालाचूं कसण कार केम ज्ञान करिने
तम हक्कने सुपुष्पिनी वनस्पति भ्रान्तही आपति
करि।

आ ज्ञानत्वी तस्माद श्रीरामधरी
सिंहा याचे, केम श्रीराम निदाने माननी
अस्ले। स्वामी नामात होम कर्मके
पायने वाचे नाम लोकांना यथा
कर्यात्वा गेलणे लाग्यां, परंतु जे
पायहे अर्थ शाशवुहुँ पछी रीत
हातात तसीली।

वधी सत्यायतिनी
को कार अवधारणा आज्ञाएँ
परवेशां मां शास्त्रां पायले है।—
मैंत्र प्रसाधन काने अपांगनामात्र।

पूर्वां गढ़ कृत्त देवतातान्या
हूँ।

अर्थः—श्रीमान आचार्य श्रीमान, हातात
आपति हे वाचे हूँ वाचे माननी
कर्यात नेष्टे। अर्थांक पूल “
देवतात्वा
हूँ।” श्री मूर्तिसूबा सिंहा याचे नाम
कार कथा छाण: कुशीविरस्विताभ्याम्।

dेवटात्वारध्यान चैव संमासायुपमेश्च।

अर्थः—आचार्य स्त्राने करीदे प्रथम
हेव, अघि गाणे गितूँ तप छ, किचिद्वृक्षः
अनुस्मृतिनी दीक्षाधार ५० जीवित रहें भक्त कहें छे के हेतु शंकरी शिवाहि हेतु शंकरी आली है। तेसरा पुरुषान्तः पूर्ण करिं छे हेतु-क्षम्यन कहें है। मेधात्मिक शेष के हेतु अतिशयांकृत पूर्ण आलिंत है। सर्वनामान्यवाचु अने स्वाभावक लटिं अथ ही मृत्तिकां निरंद थाय छे। आलसी पुरस्कृत गीत थाय छे।

आराम - पछु हमारा धर्मालोको तो हेतु अथर्स्त बिद्वान धर्मालोको
हावे ने तामो शतपथ श्राद्धमा अभावशी हेवताने अयस्वि बिदान केले। ते तमारे छोटी कर्डिका ब्राह्मण अत्यतार अभावविने मृत्तिकि पणु मानली परी।

वणी मनुष्यांत ना जो ८ ना २४ भा श्रेष्ठी अत्यतार शास यथप्र छे हेवता श्राद्धाने अयस्वि अत्यत रुख रेपे बिदान यथार्थ शक्ति नखी।

वठायुक्किलानाची वाच्य: अव्यक्तानाच च।

सोमालिखुषु कार्याच्य, देवतायुक्तानाच च।

वच्चुवेन्हूना शेखाबाण्या आकाशामा आदरका सर्वामिका तस्याचा छे के:—

नमसे नीतिमाध्या सहस्राधीका गावूचे।

अन्ये ये अथ शुचानं हळणे-यों कर्मचय:।

मंगार्य:—नीतिमाध्या सहस्राधीका मान्ये

नाम: असतु, अन्ये अथ ये शुचानं: तेस्व: अहं नाम: अकारां इति मंगार्य:।

आ शुरूनिमा व्यक्ते मेलेवाला

अनं क्षामान्येवाला ऐ वेषिष्काली शरीरधारी दशते लिख करे के।

नीतिमानं पान्या पणु उक्तने शरीर-धारी लिक्त करे के:—

वच्चुवेन्हू, अव्यक्त १२, भंग ८,

प्रामुख धन्वन्तरसङ्गमार्येवालान्यामेवालां।

यां तेहतु इत्य: परा ता सामयो वष।

मंगार्य:—मान: धन्वन: उस्मोऽ

अाचार्ये: अं लं प्रामुख च या: ते हले

प्रामुख: ता: परा वष।

वाचाचार्य:—इ परर्वत्वानन अपन

श्रवणपुर्णाने अन्ये इतिहासाने रहेली नया (दूरी) ने हृद करे। अनं

आपमा आकाशस्वे भाग छे जीन्ये हुळे

करूये। (इतयाते मार्ये सौँभूषणे यथा

श्राद्धण्।)

वच्चुवेन्हू, अव्यक्त ३२—

प्रिीहदेव: प्राद्रिशोकनुसर्या: पृष्टीहजाि: अव्यक्त: अर्थ:। सापेक्ष जाति: स जनशैली: प्रयत्नानिततिति सर्वते मुखः।

अव्यक्ता ५-२-१-२—

आयो धमनी प्रयाम: सर्वस कतो द्रष्ट्र्कणे

हुळणे वरुण।

बार— हे छद्विर! हे आपे

प्रमाण धमनी स्थापन करें, ते आपे

प्रामुख शरीर अत्यतारकपर्या धारण कर्म:।

अव्यक्ता ५-२-२-५—

महा-मानमाणितिर्यामा सर्वते तद्भवः।

बार— हे छद्विर! तये आर्यो

अनं आपे इत्याते शुरूनिमा शिष्टत

शाखाची: अनं बाबी। आपे आपे

प्रामुखी शुरूनिमा उपशिष्टहस्ताका अथा श्राद्ध आपातिक दोषेका प्रामुख आपमा शुरूे।

साम्यवेन्हूना प्रामुखा अपांकना

हुळणा वर्धमान अरुळु छे के—

वुया देवतायुक्तानाच कर्मचये, देवताव्रतिमां

हुमन्ति, रुपन्ति, नथयति, सुरुळन्ति, किन्ति

न्यारी, निमीत, नालीत,।

आ शुरूनिमे आश्रयो अं छे के

वा श्राद्धमा स्थायिक दुःखाते आपे

करूये पणु सर्वे श्राद्धां अथा भागला

वहुळे हुळणे छोटे हे तो नवाचाराने

फरोरे श्राद्धां कटू आयी पटे। अध्यात
हैवतारी मूर्ति रखती, नायकति, अनंत विशालति, आपको गौरति, आप अंत्य देखती अभियान आते तो समझते हैं शय्त तरसती हैं खुश करने यात्रों आ गुप्तिदी मूर्तिपूजा पवित्र भवन हैं अने यहां अंतर्देश मूर्ति छो जो प्रयत्न सिद्ध राख छें। वनी तमाम ते हों आपि अभावी अस्मांधारी आई आई उत्तर वस्तु मात्री नापीने हैं आम करते हैं जो धर्मरी धमृ॥।।

आई—ना, क्योंकरणा समरक नाथी। आयारी तो जो अभाव हैं जे हाम देखती हाम शुद्ध रहे। अगर ते अधर्मां हर हर सुधी पराले, ते हों बैक शरीरार्थी बाली नाथ छह।

महं—जो गौर न हाम ता असुक वाली की असुक—सार उत्तर भ्रामानी चौरू बोरी मानवानी वातावरी शुद्ध प्रशंसन छूँ एकता की सीदा सीदा सुकामां जो केवल हामवी, क्योंकर मन्त्रण स्वपनक अस्वरी नाथी। वनी तमाम शी देहीत कहां देहीत कहां ते खाल अंतर्इ आवाज करते शुद्ध ताती अने भीं रूप अंतर्गत छो। दुस्रूः ता ते हाम भवन हैम रूप अवशिष्य शरीर शरीर प्रवेश, हृदय, हृदय, के दोहों फाडियां मिट्टि रहती हैं अतवाह? अतवार करता ता प्रवलता खांसी अने रूप सरजन आसाय अलोक अतवाह करता है।

पूर्व हेठाल प्रभावी उत्तरपूर्व केक संभत छ तथा वैकीय मतना अनुस्मारक हैं चित निहत तत्व छ जो सिद्ध राख छ। तमाम खाल अंतर्गत छो राम तथा अत्युत आवाज प्रवेश करता है। जो वातना अकेले हैं उदाहरण सांबीनों—

माहात्मना आई पत्तु अकेले हैं उदाहरण मणे हैं जे वनार दर्शिता पुरा चौदावर्ष पालोकन अने वैकीय अवशिष्य आपी नखा हैं। लागे तेमनी आश्रम सालगने हैं अनेक बैलियों जीवनी पसे वहुँची श्रीवाराम अस्त्र आवता है।

For Private And Personal Use Only
श्री महाविर जैन अर्धापन केन्द्र

आचार्य श्री कैलासगरसुरी ग्यानमंडिर

श्री महाविर जैन अर्धापन केन्द्र

www.kobatirth.org

श्री महाविर जैन अर्धापन केन्द्र

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only
1982 सातवाहनी विद्यार्थियों अने मूर्तिपूजा-विधान 411

नीमकेली सुवर्णमय वर्तमानलिक होते कि, क्रमे पं. महाराणी विनोबामुनि मार्ग सागरका व्यक्तिगतको पक्ष विद्यार्थीहोते. नीरंगेश विद्याकाळी एकदिवसीय अनुष्ठानहोते. आपल्या महाकाळी संस्कृतीत तीन देखभाल करती होते. यादृच्छिक नाते निर्भर नतीजे झाले होते. अनेक पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. क्रमेकट विद्यार्थी कार्यशील अनुष्ठान मार्ग सागरका व्यक्तिगतको पक्ष विद्यार्थीहोते.

मूर्तिपूजन प्रक्रिया, पवित्रता अने आर्याधारको मार्ग आणि त्याचे हाथ उम सहायक भो द्वारा विद्यार्थीहोते.

महाकाळका दशक, रामचंद्रनाथ विनेकटखेडीच्या अनेक दृष्टीकोणात समस्तांना लागेला विद्यार्थी मार्ग सागरका व्यक्तिगतको पक्ष अभाव होते. अनेक प्रक्षेपण निर्णय गरते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. निर्णय केलेली पक्षात आपली आस्था आहे.

आहे — मार्त्यविद्या व्यक्तिसाठी व्यक्ति त्याचे हाथ उम सहायक भो द्वारा विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते.

उसे — सारी वर्तुळी कार्य आहे त्याचे हाथ उम सहायक भो द्वारा विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते.

कुठे व्यक्तिसाठी वणन सारांग आहे त्याचा कार्यकलाप आहे. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते. पक्ष उपस्थित विद्यार्थीहोते.


आ ध्यान मेे एक व्याख्यान अक्षर बना हुआ है—कि श्री महादेव बाल्यादेशी माता बना वहांता नथी अध्याय तो ज्य करना मूल्याधिक्ष करने गायन माने माइ वहांता नथी, परय मात सहाय माते जो प्रकृति मृत्यु में आगर घरी अभिनवो डांगे जो ज्य रीते आर मै पर वस्तुं नाथु महाम स्नाय राजे ते पर ज्य ज्य पर वसी बनावी मृत्यु आपानो।

आए—बला, आपान तो जे कहें न मे एक रहे ज्य राजे नया तेस कर्म अभि शक्तित नथी तो पूरी आफेे मृत्यु आपो, मनार सुन टाता करी योर कहा मृत्यु आपानो।

मं—महादेव बाल्यादेशी, देश तो वास्तविक रीते पीतरक्षण ने। ते प्रथमा कहारी अभिनव न होदा करीया कामत बना नथी। तेम के उड़े कर होदा पन नथी अने एकिन करे टिकता नथी। आपाना तो माताआदेशी माथानाथ न होने जंगे है। जो ते प्रथमा विश्व कर होने शूरी माथानाथ कमाल आमसा अभिनव गायन जंगे है, अने श्री माथानाथी शुभ नाथु, देशकी गोल्ड मिसारी अभिनवी कहारा होटल माताआदेशी होने मात मराठ है, अने गोरन करने सारं नाथु होने जंगे है। तेमा कड़ी दशीम के जे नाथु जुवे ने आपानु है, जेनेटे तेमा देशकी निमित्तकारण है।

ज्यक शीर्ष व्याख्यान मा माथानाथ दायक है जेनेकरहेन की भुगतिं
1882 अंतर्यातामक विचारधारा अने मृत्तेवृत्त - विधान 413

सर्वांशा श्रावण रहित होय छ. अनेक अन्य मतांतरियांना दिश्यनूती मृत्त अंतर्यात विचारधारा दुर्भाव होय छ. केः श्री मृत्तिका श्रावण स्वीकार करा, केः श्री मृत्तिका क्षामा श्रावण, केः श्री मृत्तिका क्षामा वर्षामुळे, केः श्री मृत्तिका पृष्ठ उपर आढ़ाक्ये ता केः श्री मृत्ति गुड़ उपर आढ़ाक्ये होय छ.

श्रीनादी भागे संसारी अवस्थाने त्याचे करवायली म्हणे की, तेही महत्त्व अने महत्त्वांमुळे संसारी हदावीती अविद्वारक होय समस्यावाचाळा निविततीने बनवे की. अने तेदी ने विनोब देवनी मृत्तिका हदावी, हदावी, विविधतांती, श्री रहित, केः पृष्ठ वाचन विनायक होय छ. अनुभवांती साधे दाख पृष्ठ आधार श्री, श्री, वाचन के भागा मस्तिष्की हंगामे देवनी श्रीने की मृत्तिका होय तेदी दीडाच देवनयन प्रिवल समस्यां मोडी. अने जमी मृत्तिकाती की पृष्ठ आत्मिक बाव उपरसन घटक राहता नये. तेदी दीड न खुशी छे की—

लोकसङ्ग: कामाचारे, हे दे पाचुसंगमहे।
न्यामाहे अक्षरमुद्रास्वरूप अमण्डलः।

अने—मृत्तिका काळां मृत्तिका होय, श्रावण देवनु मृत्तिका होय, क्षामा श्रावण आमोडलु देवनु मृत्तिका होय, क्षामा श्रावण आपेक्षितांना मृत्तिका होय, क्षामा श्रावण अंतर्यात होय. केः श्री मृत्तिका क्षामा श्रावण, केः श्री मृत्तिका क्षामा वर्षामुळे, केः श्री मृत्तिका पृष्ठ उपर आढ़ाक्ये ता केः श्री मृत्ति गुड़ उपर आढ़ाक्ये होय छ.

वहुपर अपेक्ष दाख पृष्ठ आधारात हेरू परंपरासाठी हारे परमेश्वरांनी पांढरी त्यांच्या हारे की प्रलोकांनी क्रमेव आले क्रिष्ट अने अहर्षीता करत नवी पृष्ठ अने हेरू परंपरामुळे मेंयं, अिस्तिस्मांती, मांसाश्रयाती हेतुही माहुळांनी फायदाची प्रामाण्यता अद्यावधी, अने वरिष्ठांच्या संग्रहात समाखण्याचे होय, अने आयुश्याचे माहूं विवरण्याचे आमलनिद्राये मैत्र्यवाचांचे किंवा अच्छे अलेक्ट साधन होय. आला हे मृत्तिका हारे परम पुनरीत बाबती बीमार होणारी श्रावणा श्रावणे अनेके माहूं धडाणे बोलडे चैतानी भूव वाणी अत्यधिक अदले. भेटून अनेक अदले हारे परम हारे साधने तो.
લખની સ્થીતિમાંની જૈન મૂત્રિજીઓ

(જનાંશી પૂલં) સાંભારમાં સભામાં સુમય લગ્ન વિબાંધ છે: જમધુણી પાણુઓ જશુ હોય, ભારી જાળતા લાગું હોય, અંગ સુખી વસ્તી લાગે છે. આ વિશેષત જમધુણી આખું હેતુણી પાણુ જે સોની લાગી છે, કેટલાંક પાણુની નભા અને ઘટાન સામર્થી મૂત્રિજીઓ છે. દેખી સુતી ઉપર જ્ઞાતિઓમાં J જમધુ છે, અને ટ્રેક્સ છે તે પાણુ જ્ઞાતિઓ છે. વસ્તૂ નવીનાં હાતખાતા નહી છે. જમધુણી સભામાં, નાના બોલા આપવા સમય, ભાવ આપની અંગીઓ વેલેમાં તથા છે. J તે આપની વિશાલતા સદ્ધ કરે છે. જે કે M તથા Fએ લાંબી પાણુ જેન મૂત્રિજીઓ છે. પાણુ તે વિવિધ છે.

યાસૂલ વિશાલમાં તાંખી સુદી વિનને મૂત્રિજીઓ પાણુ છે. આ દેવ મોરી મૂત્રિજી છે. આમાં શેરી આપવા છે. જાણ પાણુ મૂત્રિજીઓ ઉપર સિલાવાણી છે. સાસાંગી, મહિર, અને આજ, પણ લોકી પહોંચાય. સમ્મ વર્ણ વચારેલ છે. J 776 જનાતામાં પાણીઓ કે ખાં માટે કમાવશે વિનમ્ર છે. તે સુંદર સુંદર તથા માટે પણ કે સમાન છે અને તેને કોઇ અણા લેના નથી. 

સુંદર પરમાત્મક અંગૂઠે પ્રાપ્ત પહોંચજ સુંદર પરક પર સહસ તેને ઉભાણ આંડ શોભા મેળવી. જેમાં જે માટે જ્ઞાતિ હેઠળ છે.—

હું ૧૦૬૩ સાલ હતી ૧૬ વ....સાંભ વાસળ પ્રાંગણ કલીકું સાંભ.


કેમ તે લખી કે પણ બાદળાંનું વાંચું હેરાવી અને વેગ વચાર ગયેલ હેરાવી તેમ ક સાહિત્યવાર પણ સાહિત્ય હેરાવી આખા ઉતારી શાયદ નહી અને ભાવણારી સાથે જીવન હેરાવી મૂત્રિજી તો પહોંચ્યા જશનુ વચાર કે આકાર છે. સુદી હું અને જીના જમધુ અને પ્રાણાં જેન સુંદર વચારની આપો છે કે તેને વચાર કરી ના સમ કયાંના નક્કર છે.

અંગી ક રીતે બધાઈ આશ્રિત છે J 790, J 793 સુંદર અણાંક્રાજર અને સમાધાર બાળી. આજ વચાર વચાર જેની અંગી પ્રતિમા કે સુંદર આપણે હેરાવી. 

સમાધાર આપઠા પ્રતિમા છે જ્ઞાતિ માટે આંકણાં સુંદર વેની કે પણ જમધુ અંગી કે સુંદર આપણે દુઃખામા હેરાવી. 

જમધુ પ્રતિમા તે વચાર ક આપણા અને સમાધાર પ્રતિમા છે. આમાં સુમય પ્રવાસ્તત્ર શુંખું ભાવણારી અંગી છે. મહેરુદના પ્રતિમા જાણીએ હોય મૂત્રિજી તથા છે. તેને ટ્રેક્સ છે. પણ માટે જમધુણી પાણુ જેની પ્રતિમા કે સુંદર અંગી છે.

J 142 પ્રતિમા પહોંચ તે સુંદર અને પ્રાણી છે.
संवत ९१३२ जी शताब्दी श्री श्रीपे अदेश, श्रीमान जय भवानी नाथजी कोवालियर वाद, श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान श्रीमान
पत्र गुड़ी गोजेल ४. सहायकोंकै सेवानी ओक करी धारी/धारीनी नें कुंड तारे ओ नें ना दर्शन घरां हातो।

J 53 तथा 54 वर्षावती नृति ४. सिंधुमा जमावनी पाट, गाटनीं दयामा परमांक आंगे जन अवश्य नदरां नोदरां आहूहिंदू ४. मारी ओ जगदी अन्तिमांौ २ जेमा ओकमा सर्वप्रथम आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां ४. न्यायी नीविंदली साहित्यी ओ आयाकलां बनी वाची ओ वाची नाबजितानी हात नें रवि डूला हो।

J 118 मां फुरी आयाकलां सहित नोदरां नृति ६. J 18 ओ ओक सर्वां वेदां १२ चारी न्यायी ४ अगे वर्पां २  साध कलां नोदरां नृति ६. जा सुधी वाचा डूला हो। नुकुंड ओ सर्व आयाकलां दर्शन ३. आयाकलां विद्यालय नेमां नेमां नेमां पैद्धु उपमांधू बने नृति ६.

J 880 तेमतों नीवों भुज में ५—
सं १२ १२ १२ चेपा जुडी २ रानी पूं टू एथे तेया तेया विद्यालय विद्यालय प्रतिम प्रणाम ता।

J 871 नेमां व्यायामा हरानी आधिवृका आधिवृका आधिवृका आधिवृका हरानी बापु ओ नोदरां आहूहिंदू ६.

J 258 ओक आयाकलां आयाकलां नोदरां पृथ करा आयाकलां हो नें नोदरां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां नेमां

J 24 आयाकलां ओक सर्वां वर्पां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां ुणां व्यायामा ओक नोदरां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां ुणां व्यायामा ओक नोदरां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां आयाकलां
આ નદિ નદિજ ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની નદી ની 

આ નદિ નદિજ ની નદી ની 

અને તેમાં સિદ્ધાંતની પાણી 

તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય તસીય 

આ નદિ નદિજ ની નદી ની
क्षणिक

हेलकः — श्रीमान् अश्वयन्ति मिश्र

भारत के प्राचीन सचारू महादानी उज्जवलिनीपति महाराज विक्रमादित्य का नाम सभी जानते हैं। उन्होंने भारत के अतिरिक्त भारत के समीपवर्ती अन्य देशों पर भी अपने प्रसिद्ध प्रताप का प्रभाव डाला था। विक्रमादित्य ने बहुत परिश्रम और पनवथ्य से भारत के लघु तीर्थों का जीवंतकर तथा पुनरुज्जीवन किया। यदि वे इस काम को न करते तो भारत के किशोरों को पता भी न लगता। वे बड़े गुफानुमारी गये। उन्होंने अपनी समाज में बड़े बड़े विलक्षण को आरंभिक दिया था। वे साधारण विद्यार्थी न थे। उनका नाम समस्त भारतपूर्व के लघु जानते हैं। उनकी समाज के विलक्षण में नव विद्यार्थी बड़े विकास थे। इसलिये वे ‘नवविश्व’ कहलाते थे। उनमें कालिदास धरोहर थे। अमरसंगीत के प्राणीता अमसंहिता, रंगसिद्धान्तकादि श्रेष्ठों के निर्माणा प्रसिद्ध आयोगी वास्मिकुर, परंपरी कला के रचिता परंपरी आदि विद्वानों की सभी लोग जोड़ा कर किया जाता है। वे आदि क्षणिक को बहुत ही कम लोग जाते हैं कि वे कौन थे और उन्होंने कौन कौन से कार्य किये। इसलिये उनके विषय में दो बार बताए विक्रमिता अवस्था रुचिकर होगा।

क्षणिक जैनमताद्वेशी थे। वे वेशवंत संप्रदाय के साथ थे। क्षणिक श्रद्धा का अर्थ है संन्यासी। उनका नाम अत्यन्त न था यह उनकी उपाधि राजा थी। उनका नाम था—सिद्धीसेन दिवाकर। उनका जन्म गुजरात में हुआ था। विद्या सीखने के लिये वे उज्जवली आये। उनका गुरु का नाम था ‘बुद्धदासदिवाकर’। जिस समय सिद्धीसेन दिवाकर ने जैन संप्रदाय में प्रवेश किया उसके पहले उनका नाम कुमुदचंद्र था, उन्होंने अपने श्षीयों की रचना की। उन स्टोव—समूहों का नाम उन्होंने “कल्याणमन्दिरस्तव” रखा। उनमें आता है कि एक चिन उज्जवली में महाकाल के सामने के ‘कल्याणमन्दिरस्तव’ का पाट करने को। उस स्टोव के प्रभाव से महाकाल के मन्दिर में जैन तैलियार अयोध्या की मूलि अयोध्या ही प्रकट हो गई और विश्वसनी संदेश—संदेश हो गई। इस घटना का समाचार गुजरात महाराज विक्रमादित्य आयर्थों में दब गये। उन्होंने सिद्धीसेन दिवाकर से जैनसम्म न महाकाल सुना। और उन्होंने जैनमत की दीवार भी बनी। जैन अत्यन्त जैनता के गुणोंपूर्ण थे वैसे ही विक्रमादित्य भी जैनधर्म के पुष्पोपक हुये। इसी कारण

1. “कल्याणमन्दिरस्तव” स्तोत्रसूरहों का नाम नहीं हैं किंतु एक स्तोत्र—विशेष का नाम है। —लेखक
<table>
<thead>
<tr>
<th>१६७२</th>
<th>कृपालुक</th>
<th>४१६</th>
</tr>
</thead>
</table>

विक्रमादित्य की सभा में जिस प्रतिष्ठा के साथ कालिदास आदि वैदिक धर्मवक्तव्यी विद्वान
रहते थे उसी प्रतिष्ठा के साथ आयुर्विद्या आदि सौर धर्मवक्तव्यी विद्वान भी रहते थे। संभवतः
दिव्यदेर ने भी विक्रमादित्य को प्रतिष्ठित सभा में प्रवेश किया और कथा: उनकी
वासना में लिखी होगई।

जैन प्रणयों के मत से महावीर (जैनों के अन्तिम तीर्थंकर) की निर्वाणग्राहि के
४६२ वर्ष बाद कासिहत के ५७ वर्ष पूरे क्षणों उज्ज्वली में विधामण थे। उनके बनावे
लिखने प्रथा इस समय मिलते हुए उनके समस्तिक्षु सूत्र और न्यायान्तर प्रवचन है।
ये दोनों प्रथा न्यायपालक के हैं। न्यायपालक की यह इस विश्वक जैन न्याय
का प्रथम प्रथा कहें तो ये अद्वैत न होगी। इससे केवल ३२ ही स्थान हैं क्यों
उसके इस ही चौकों में जैन न्यायबाहू का विकास संशोधन स्वरूप से महत्वपूर्ण हो
जाता है। पूर्वीक प्रथा में प्रवचन, अनुमान और विधेय तथा नया और स्वायत्त का वर्ण
है। अनुमान और अनुमान के दोष समुह ऐसी योजना से और किसी दृष्टि के नहीं
लिखे। प्रथा का प्रथम स्थाय तह है।

प्रमाण स्वप्रावधायसिः, ज्ञान बाधविनिर्जितमस।
प्रवचनं च परोपक कु, दिणायायिनिविनिविनयान ॥

जो बाध्—रहित ज्ञान अपने और दूसरों को प्रशासक करे। उसीका नाम प्रमाण है।
खेल पदार्थ—समूह दो प्रकार से निर्धारित होता है। इसलिए प्रमाण भी दो प्रकार के होते
है: प्रवचन और परोपक। प्रथा का अन्तिम स्थान यह है।

प्रमाणादिव्यायवस्थेय—प्रागातिनित्यनामिका।
शरसंयं यद्वप्पयां, प्रसिद्धाम प्रकृतिताः।

यह प्रमाणादि न्यायशा अनादि काल से जल्ली आती है और अन्तिम काल तक चली
होगी। उसका न्यायशास सबी लोग करते आयें हैं। यह कोई नई बात नहीं है। विक्रम
संवत् १५५९ अथवा १५०२ ईसवी में चन्द्रभारसी नामक एक जैन दर्शनिक हो गये
हैं। उन्होंने न्यायपालक की एक विद्वान टोका लिखी है जिसका नाम न्यायपालक—विपक्ष
है। उनके बनावे दो प्रथा और भी मिलते हैं जिनके नाम दर्शनशृंदि और प्रमेय-
रचनेशास हैं।

कुछ दिन हुए श्री सतीशचन्द्र विधामण ने अपने जैन मिश्रों को सहायता से
न्यायपालक की एक अति प्राचीन विश्व सर्वत्र जल्ली विद्वान दर्शन में मंगाई है। उसका अवधार
वव्हाक करके उसके विषय में बुत सी बातें लिखी हैं। [पीछे देखो।]
"स रस्त्ती - पूजा आ ने फळोः" लेख-श्री साराबाई अभिलाष नवाम (आर्थिक, विद्याविलय, ऋग्वेद) (गतांकी आहु) आर्थिक जीन साहित्यमां जगो आपाता हेवी सरस्तीतीना रस्त्तोपनी तथा देख्योनी नामो आ भस्मिना अहामां हु दरी गमे छु, परंतू आपाता आधारमां सुजाभारं आर्थिक विद्याविलय भूरिप्रकाश, विवाहोनी तथा विधवा बधारे आधारीक जे लावता रस्त्तभी तने धियत निर्निध धरानां हु गास जगा अन्तर्गत बेंगालने वर्ण आपी खालीण हु न्याक्षारा लेखांवें वर्तमानाकालिन व्याकरणमां परिषद्देखी आपातनां हावैं हु धरात नयी, पहारू भरी ग्राममां दे मे लेखांवें आयु हु तने अ निर्णयृ मेंः करेले हे आ लेखां भरेशु धरानां धरातां तारे अ वर्धनानी अपातू जधें तेमां दिमा आपातमां आले, परंतू पन्ना संचाकारी ते पर्योदा गोविने विद्याविलय इष्टां नहीं दहावीणी खिदें विवाहानु अ विनेत आपातां में गास धारुः हेः आ वर्धनेते मेः ने विवाहां वहृदें नाप्यां हेः १ विवाहां भूरिप्रकाश तथा २ विवाहां आर्थिक तापर्यानर तथा क्राप आपेक्षानी खिदें।

[ 'क्षमपद ' का अनुसरण ]

जिस समय (१९५३ से १९५६ विकासात तक ) में मल्या के प्रसिद्ध जैन साहु श्रीमद्धारक विजयराजेश्वरी का आर्थिक होकर जैन ग्रन्थों का अवलोकन करता था उस समय संस्थापक स्त्री का एक अति प्राचीन हुस्त खिदत पुस्तक मैने भी देखी थी। उसके अक्षरों और मात्राओं के रूप आयुद्धिक देवनागरी अक्षरों से हजुड़ हिलित थे। कापड़ का रंग भी हजुड़ मट मेला था। उस पुस्तक को २५० हाई दी सी रघु देखकर विजयराजेश्वरी स्त्रीने एक साथ से खिदिया था। और शे उसे हजुड़ यान के साथ रक्षित थे। *

—सरस्ती, पाणिग्र्ह—१५, क्षेत्र—२, अंक—३, पृष्ठ—६२ ते उद्धत

* यह खेल महामहोपाध्याय वाक्यर सतीशचन्द्र आचार्य विद्यामूर्ण, एम० ए०, पी० ए० ई० के एक खेल के आधार पर लिखा गया है।—खेलक।
विभाग १ मूलनिमा:

सरस्वती हेमी लाॅकधृष्टिमाा मणी आिेवी दर्ि फाल सांिदानी मूलनिमा मोही आधीनामां आधीनी मूलनिमा मैॅ पेतल्मांगर सांिदानी स्थरानां कांती दीक्षामांई वेश सहितानी मणी आिेवी है।

मूलनिम १. आ मूलनिमी प्रतियूित करिे 00 जून 000 आ अशी ब्योला अने पुरातत् विषय वी-सेंट शीषकरा संगति ‘The Jain Stupa of Mathura’ नामापि पुरात्ताना पाना 00 ताम सो फ्लेक्स नंगार 00 उपर प्रि गूिो। आने अंती नेवना बेकानी नवल भुिरारायी दीर्घाता पहेला बालुमाना पाना 000 उपर अशी व्यशेली हुईं ते अद्रासः: आ मांिेहुँ हैं:

1. [ सिि ] प्रथम र 00 देशानामे चतुर्वेे 00 दिवेे 0 अन्—
2. स्थ पुरावां दैििावी [ग] उनािी स्थानि [य] तो कु िाती—
3. वैिा शास्त्री श्रीमहाविश्वमर्यादाः [्ठ] तो संभािी वाचकेमार्याः—
4. [ह] लक्ष्मिनिर्देश विषये गंगापुर्वी आर्यमभवात्ि्ि्ि तुधरे वाचकेमार्य आ[च]—
5. व्याख्यात्तिसु कव्येश गंगापुर्वी पूज्यकार्य कृिीकार्य दाने—
6. सर्पसंतानां हितसंिा एकसरस्ती प्रतिरूििा अतिसे राजन[चैन] रे—
7. मे [च]—

आ सरस्वती हेमी लाॅकदृष्टिमाा मे हािा है। केमानी नम्ब्रे दाि कांता वीरति भवेल सक्षेष्ट है, तेिी साधी तेधुिा हािमां पकेथी पश्चि पशु पानेिी है, आपि आयाम हािमां तेजी नियुिे पकेठे हेिा है। विी तेधुिे, अिे पनि ब्राह्मणी पेदेही विीजळीिे करीि है। आ मूलनिमी, श्रीमनि श्रीलांि देशाना के आी हािा है। केिे केिे हैं के देशानामां हेरायनी लांछितुयां अन्वेषकसुिे अिे तेिी अिे शाना महादत्तानिा अतिल दणिी हािण ता है ते वाने निश्चिति कसिताना अक्ष अस्तिि आी।

अन्वेषकसुिी वाने अिे हैं के दा निवाराकल्य बहुतसे शाक नेवा मूलनिमा विषमां रस बेशर महादत्त नेवाता ‘आधीन पाथराव’ नामापि अिेहा पहेला भाषा। अमृतसि तरिके आ सरस्वतीमां मूलनिमी विरूित मरता अिे नस्तु खामां भाषा सहित 20 केिे हैं अिे अिे हृिी मूलनिमां महादत्त भाषामां मोह और अर्थता वा 00 अन्वेषकसुिी वाने अिे हैं। अर्थता वा 00 अन्वेषकसुिी वाने अिे हैं। अर्थता वा 00 अन्वेषकसुिी वाने अिे हैं।
मूर्ति २. शिखारेश पदल (Palta) नामनी विनेदिरिहिता वा महान्य अनुभवायमा सैद्धांतिक समवेत द्रम्मान्ती दक्षिण मधुकार (Life size) नी सरस्वती देवीनी दस्तार मूर्ति है। बनेनी महत्ता द ५ स. १८३२मा असिद्ध तुच्छका ‘Malaviya Commemoration Volut’मा प्रकाशित नै सभीत विन्य सेवामा अपराधनी आयी है।

आ मूर्ति नारे हाथ है। उपरत नमश्वा हाथमा गलभुदु हुँक छ अने खण्ड हाथमा पुझ्लक पहेली है तथा तेरैनी नीयनीता। क्षमा हाथमा (आकस्मिक) भाषा तथा खण्ड हाथमा क्रमांक (पात्री बारात्वर बालाक ) है। वर्णी तेरैनी नरसंहला वाशाल हर्षिक रोहितीकरण भूमि निर्देशन करता तथा देखा महाप्रशान्त साहित्य अने मुदातारी श्रुत्यात, तेरैनी नागपाता, खण्डांना तथा पन्ना आदर्शको अथवा तो रमण रतीत कार्याचे हायस्म हे के नवनाती अमेरी ६ धारे हे नाग्ये मारी सामून देवाया, सरस्वती नीयनीता माता बरिकत छ। तेरैनी मारताती पाण्या आद्या हर्षिक तथा आद्यान्वाले म गंवारी हाथमा, दुर्लभी भाषा लागू नेनात, विस्फोट्रे बुध न आयुर्विज्ञान रूपक साध्य है। तेरैनी गने पन्ना आयुर्विज्ञान म भोजी। हाथमा विविध पारंपरिक क्षेत्रक छ अने देख पन्ना तत्वात्विक पासे क्षमा आद्या अथवा अन्यहिती नीयनी प्राप्त करतं किल्ले रूपक साध्य है। मारी सामर्थ साहित्याने पूर्ण करती आ गने आई-समुद्रे भी विशिष्ट नाह इत। पन्ना आयुर्विज्ञान साध्यातमन अने विषयात आयुर्विज्ञान विशिष्ट नाह होते। पन्ना नीयनीता भाषामा हर्षिक पाण्या रूपक साध्य है।

मूर्ति ३. सरस्वतीनी अथवा दक्षिणी मूर्ति पावगान्ता चुजी उपर पहेली हस्तां केन्यशाखामा संपन्न मिनामिरिहिता आयुर्विज्ञानियोंचे कुरं पूर्वी हाथमा तां वान्धकाचरण मा महाप्रशान्त मेलिकरी हिकारांची अर्ध्येवाना आयी है, कनेल ईजामाउ हाथमा मारी पासे छ। आ मूर्तिता अन्योऽनी साहित्याने केनेल आम्ही आ मूर्ति पान बशामक अन्योऽनी साहित्याने केनेल आ हायस्म है। आ मूर्तिता आद्यान्वाले म सरस्वती बाटते हाथमा पन्ना पारी साठवला रिलेशा छ। मारी आद्या वेटी वाण हस पन्ना सिल्पिके रूपक साध्य है। तेरैनी चार हाथ है। उपरत नमश्वो भाषामा वीचू अने क्र.भाषामा पुष्टक है तथा नीयनीता क्षमा हाथमा माणा आने खण्ड हाथमा क्रमांक है। आ मूर्ति भाषा पर्ययती है ज्या तेना अवस्थाने केनेल बुधने कथाक होते कनेल में वेटी नेते विशिष्ट ना वस्त्र आयेचा। आचरण तो पूजारताने आयुर्ज्ञानिहिता आयुर्विज्ञानको साधनने भाषा केनेल आयुर्ज्ञान भाषा माणे छ तथा केनेल आयुर्विज्ञान क्षमा हाथमा (आकस्मिक) माणा आने खण्ड हाथमा पुष्टक है। कनेल मूर्तिता सरस्वती

मूर्ति ४-५ आयुर्विज्ञान आयुर्ज्ञान भाषा मिनामिरिहिता सरस्वतीनी ने मूर्तिता निव. ५. १९४४ ने हेमगाजैनी है, आ गने मूर्तिता चार हाथ है, ते पौरी हस्तां क्षमा हाथमा केनेल आने खण्ड हाथमा पीछा है तथा नीयनीता क्षमा हाथमा (आकस्मिक) माणा आने खण्ड हाथमा पुष्टक है। कनेल मूर्तिता सरस्वती
सरस्वती-पूजा अन्न जीतो

1982

श्री महाविर जैन आर्धना केंद्र

श्री महाविर जैन आर्धना केंद्र

www.kobatirth.org

श्री कालसागरगुप्त ग्यानमंदिर

श्री कालसागरगुप्त ग्यानमंदिर

For Private And Personal Use Only
પૂર્ણતન ઈતિહાસ અને સ્થાપયત

(૧) પ્રથીત લેખ સંચાળ (૧૭ શ્રેણી) ૯

(૨) સર્વત્ર ૧૨૯૪ વષે આધ્મટ (સ્રી) શ્રી વીશ્યુત નાગડીકાલું દેશક પ્રતિક્રિયા શ્રીપતણ: શ્રીપતણ કોરાકસાયકના દેખાકોટાના પ્રતિક્રિયાઓને શ્રીસાધાપ્રેણીશ શ્રી મહાભક્તિસ્વરૂપશ્રી કાલાલિખતી હેમજી કારના સર્વત્ર ૧૨૯૪ વષે, કાલક્રમે અમિતા અંગૂઠી, દેશક દેવશ્રી કુકુરી કેટલી પીઠપદી પીઠપદી અજાઢા કલમ સુધી મુખ્ય શ્રીસાહબિલીપદી નદીદારના શ્રીભક્તિરામ નદીદાર શ્રીસાહબિલીપદી કેટલાં ૨૩ ! (શહેર કલમ–વસ્તુનું તોશાઇ હોય ?) કરવાની.

(૨૦) સર્વત્ર ૧૬૮૩ વષે આસા (શદ) બદી યુરી. મહાજન ગુજા (૭) ૩ ગ. (૪) જણાડ માટ સર્વક્ષ તમ(કાર)લિં (૭) ૩ શ્રીપદાધિબીંધ. ૩૭ તાપકે સ્થા.

(૨૧) સર્વત્ર ૧૬૮૩ ના સપ્તાહ બદી યુરી, મહાજન ગુજા (૭) તમ(કાર)લિં (૭) ૩ શ્રીબીધારદેશના શ્રીભક્તિરામ નદીદાર શ્રીભક્તિસ્વરૂપ કલમ તાપકે સ્થા.

(૨૨) શ્રીભક્તિના ખનનિનાગ વા & ૧૫ તે શ્રીબીધારદેશના શ્રીભક્તિસ્વરૂપ કલમ તાપકે સ્થા.

1. "ાની બેચે સંચાળ" નામના લેખભાગના ભાષા વસ્તુનું સર્ સંચ્ઢ શૌલાદેશીને પુસ્તકપાટ શ્રીમતિપરમેશ મહાદેવની તપાસ થયું છે.

2. નંબર ૧૫ તાલના શૌલાદેશી મહાદેવની પ્રતિભા શ્રીમતિપરમેશ ગુજરાતની મહાદેવની સંપતક કન્યાની આસ થયું છે.

3. નંબર ૧૬, ૧૭, ૧૫, ૨૦, ૨૧, ૨૨ તાલે શૌલાદેશી મહાદેવની પ્રતિભા શ્રીમતિપરમેશ ગુજરાતની મહાદેવની કન્યાની પર પોતાની પોતા અને તાલે શૌલાદેશી મહાદેવની પ્રતિભા શ્રીમતિપરમેશ ગુજરાતની મહાદેવની કન્યાની પર પોતાની પોતા અને તાલે શૌલાદેશી મહાદેવની પ્રતિભા શ્રીભક્તિસ્વરૂપ કલમ તાપકે સ્થા.
(22)

सं १६८२ वर्ष आ [०] वो ४ गुरुं श्रृं (श्री) लठांक श्रीमानाचे(?) प्र [०] आ [०] विजयदेवसूरिमः

सं. १५८२ ना आयद वर्ष ४ ने शुलार्ये, शाह बाहेर (४) ना असं मारे मणजे निजम (४) बास्करुँ, अने तेंदू तपासाची आयावें श्री विजयदेवसूरिमः ३ प्रतिष्ठा करी छे.

(23)

मूलनिधनाथ
असारा
श्रीबाबानाथ

(24) ४

संवत १२१३ मासपद शुद्ध ५ मंगलदिने श्री बंडवानाथ वैजयदेवसुरिमः
श्रीवंशातीयांगुळचे (?) महासीह सुमतिंदरसेहाउरात (?) जयंत। श्रीमहावीरदेव(वाय) वर्ष प्रति दाम ५ रक्षामुखे (?) दर्श: ज(य)स्य समि [:] तर्य तदा भां (फलम्)॥

संवत १२१३ ना आयदवा शुद्ध ४ ने मंचा मुहारे लिवेसे, श्री दांतसागर पवित्रसुरिमः ४ राजभाँ (अ र व वेशना-पितामाह सुनाम ?) गहुरसिंहूँ चोलाना निम्नवस्तुना उदार (अरे-अरे) ही ओवकमाढी; शेंड रामपालना धूल रावसार तथा रक्षामुक्त विनाशितमुखा आइनाही-केहीच्या आमवे मारे हर २ वरं आर आर हाम आच्छादन केल्याक असूने छे.

३ श्री विजयदेवसुरिमः, श्रीकुलुकर श्री दीर्घवर्षसुरिमः शिखा श्रीविजय-सेनसुरिमः पदके लिवे समय शाय छे.

४ आ लेम धारावा (माराठा) ने छे. क्षेत्रमार्ग श्री महामार्गवां वल्लिदाने हवी.

५ आम नायक (माराठा) माथी मेल्या, उडळी संध्याना, वि. सं. १२१० केळ शैक्ष ती मुहारे एक बेंगाना "छायात आहारात किंवा आहार-पारिवारिक असुशांसेतीनी सेवा करतार, शीताल (लक्ष) देखी नोळतो महापरम्पर्य डावावर श्री वेलके": वाजे वापस छे. ते अनंत वा, अनंत बेंगानी भित्र वाघाट साधारणेन तेव न अनंत बेंगानी अंगने हेकरा माणातला गंगादिनी नाहीलो. महापरम्पर्य डावावर वेलके, अंग न आ लेंगेचा डावावर वेलके हवी, जेथे जवळ छे.
<table>
<thead>
<tr>
<th>संवत (२५)</th>
<th>१२०३</th>
<th>वैशाख सुदी १२</th>
<th>संविदांने श्रीमहंत (२) नैसर्गिक:</th>
</tr>
</thead>
</table>

श्रीमहंत १२०३ ना वैशाख सुदी १२ने श्रीमहंतांना दिले, नामः श्री भवानी-श्रीमतांनी. हे अवश्यमध्ये तात्पर्य सावले उपर्युक्त सारांशातील काही जाणारी आहे. सर्वांनी श्री महंत (३) सूचनेची प्रतिक्रिया करी शकतील.

<table>
<thead>
<tr>
<th>संख्या</th>
<th>१५०६</th>
<th>मासविड़ ११</th>
<th>साल २० जवळ बीसम महिपाल व्हाॅग...</th>
</tr>
</thead>
</table>

से [०] १५२९ मासविड़ ७ चैत्र श्रीसीतास्यांला मोझा २० रुन २० अजुन ३० तितुहांच्या सुदुरे (५) मोझ्या (६) देवांने अल्लू गहांकेन श्रीपवयोपाध्यायींच काळ गए श्रीमूली (७) देवसूरिम.

| संवत | १४२४ | वर्ष | २३ | ने सामाजिक श्री दिग्दर्शक-संघ, मैदूळ मातिशी walker (नगरी-दार) रत्न, क. आर्नून क. तिंकुहु; युन गेडेजना उबाळ pathology मोडी तेना बाहेर रहावी श्री पर्षदांनी सुरुवात वाचू धावण्याची प्रतिसादीं करून अने तेनी श्री दिग्दर्शक-संघाची प्रतिक्रिया करी शकतील.

| संवत | १६३० | वर्ष | ८ दिवे श्रीबाबाध्यामुळे उसवालेेले मोझ सोला (७) कीबाबाध्यांच्या (१) सागा साहा माला आ[०] जेरेलडे पुज्या राजा माला (या) सेवादेय पुज्यांज माना कारसी श्रीकुलकाचार्यांचे (कुकुलिकाचार्य) ग्रहणार्धज सर्वत्र जगातील निर्माण समाप्त.

| चौथ | २५ | नवंबर | श्रीलक्ष्मीहीरो विद्यासागर, नामांक (भारत) ना श्री भवानी-श्रीमतांनी अवश्यस्त. हे समस्त अंशांतरांच्या राज्यांच्या विशेषांनी आहेत. नं. २५, २७ ना कॉन्कणी आणि अंतर्गत सर्वांनी असे नं. २८ ना बंद आणि अंतर्गत सर्वांनी ध्यादणी तिन्यांच्या प्रतिक्रिया प्राप्त केलीत.

| चौथ | २५, ३० | नवंबर | भारतांच्या नामांक पासे आवेदा वेळात आहेत. तेनांनी केवळ ध्यादणी असे नं. २५, ३०: भारतांनी ध्यादणी तयार केलीत.
संवत १९२२ श्रीमर(?) प्रमसूरियप्रदेश प्रतिष्ठित
(२१)²
संवत १६६४ वर्ष पाण्डुर दिन १३ स्वेता श्रीत(?)वापर मोते सेवनी ठीक भावी डीभड़े पुत्र सं० गोपा भावी में उमे पुत्र रूपा पत्र श्रीराहुलीया भावी मनमारे पुत्र मोजा मिर० ना...............श्रीपाठानिनाथीमणित्व तपान्त मार्खर श्रीपाठानिनाथीय......
संवत १९४४ वर्ष दासुण..हि १३ र (श्रीमर?) ने तिसरे,.........साती, भांखु गोचरा संवनी डीभड़ी भावी हालमना पुत्र संवनी उपाधी स्वामी में में मार्खर पुत्र बोजना १, पश्चि २, ३, श्रीराहुलीया ३, लेमणा श्रीराहुलीया भावी मनसर्वरीना पुत्र गोजा.........
............वे श्रीमर धार्मिकायो वर्षकी, अनेक तथानुसार १६४२ हालकी श्री लीलाचंद्रसूरिले महाराज अभिषित करी छ।
(३२)
संव १३७३ वर्ष वैशाखमुद्र र० राी उड़केमोगरे श्रीसद्दाचयसंज्ञाने श्रेा
[वे] लह मार्दै तपुज्ज श्रोतनसीम्ह सकुटुवें आमेशवर्यासे पार्थाशचिविवं कारिते। प्र० श्रीदेवगुरुमृत्रिकृतः
संवत १६४७ वर्षा वैशाखमुद्र र० ने रविवार, भांखुवालातरीय भोजियाश्चत्रा संतालीया, श्रेष्ठ नेहैदी भावी हेतुमना पुत्र, वैशाखमुद्र जुल० श्रीचालना ज्ञात ज्ञात नामकादि से हो। श्री पार्थाश बागतांनू मिर० वर्षकी, अनेक तथानुसार १६४२ हालकी श्री लीलाचंद्रसूरिले अभिषित करी छ।
(३३)
संव १५०७ वर्ष महामुद्र र० चौ गो प्रारंभ। भासा मार्दै तपुज्ज श्रोतनसीम्ह सकुटुवें आमेशवर्यासे पार्थाशचिविवं कारिते। प्र० श्रीदेवगुरुमृत्रिकृतः। भांखुवालातरीय भोजियाश्चत्रा संतालीया, श्रेष्ठ नेहैदी भावी हेतुमना पुत्र, वैशाखमुद्र जुल० श्रीचालना ज्ञात ज्ञात नामकादि से हो। श्री पार्थाश बागतांनू मिर० वर्षकी, अनेक तथानुसार १६४२ हालकी श्री लीलाचंद्रसूरिले अभिषित करी छ।

८ नवंब्र ३५, अ. ३३ वाणी देवी, नागदीरानी पार्वत्या अंको गामना
छ। करत्व धारुणी विज्ञापिता गर्ना हर्षी।
८ जा भालुक नामां गाम पालतेलुस्त्वती पांग गाजली हटी पर आवेशार है।
. મહાભલાદાસી પૃથ્વિધેય
શ્રી રાત્રિ ના પાંચ ના થ
ભેજક—આચાર્ય શ્રી વિજ્ઞાનપુર્ષી

( ગરાખી ચાહુ )

જેટલી વાણી સાંજે અતિકલિભા કરી રહા આ શ્રી આભિષેક સુનિને જેટલી સિયાળે કહ્યું કે—શ્રી મહાજારાજ! શ્રી આભિષેક સાંદ્રતિતસંसાદમાં કહેલી ‘બંધર-જળવાળવાળાના’ શિવાબદ્ધ આ આવનારા. હું કરી અધિ સમજનો! ત્રણે શ્રી આભિષેક એ ગાયામાં મદાના વડાણયેલા તમામ વડાણયેલાઓ શ્રી સંપૂર્ણ પંચ કરી સંભાળવાયું. તે વાતે ઉપાયોની પડેના બર થયાણે આધી નતી શ્રી સંભાળવામાં નિમિત્તે મીરી શ્રી રાજકુમારી આશ્રમ પંચ આવનારા. આ અપૂર્વ શીલદાસી સંભાળવી શ્રીરમણી પીપાટી ભારત શ્રીવાસ વાત માટે આવી છે. આણો અમહોળી શીલદાસી શ્રી મહાજારાજ શ્રી ભવના કદલા રૂપાંતરી કરી એ જેની પીપાટી શ્રી ભવના કદલા રૂપાંતરી કરી એ જેની પીપાટી શ્રી ભવના કદલા રૂપાંતરી કરી એ જેની પીપાટી શ્રી ભવના કદલા રૂપાંતરી કરી એ જેની પીપાટી શ્રી ભવના કદલા રૂપાંતરી કરી એ જેની પીપાટી 

1-આ રસતાના આભિષેકશી નેલિમાનીમાં ગાંધાર શ્રી નાશિની ગાંધાર. આભિષેક જેમ પણ કહુ' છે કે આભિષેક રસતા ધૂન નાશિની આ રસતા ધૂનાયું.
अज निश्चित वृत्तियों भेजने के रूप में अधिकतम शारीरिक संदर्भों से हास्यमय अने वीरास्त का। तथा वृत्तियों के रूप में निरंतर निविठतायें नवीन निष्कर्षों नवीन विचारों वाले विषयों में आधिकारिक तीन दिनों के बाद लेखन करने की जरूरत है। अगर विद्याभिंदु का किसी भी विषय नियत नहीं है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक उपयोगी सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

यदि कोई विचार शाखा या क्षेत्र में अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय निविष्ट व्यक्ति का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।

विषय के अभ्यास का अभ्यास अवश्य अच्छा हो जो आपके पास है तो वहाँ उत्तर देने के लिए आवश्यक सामग्री का प्रयोग करना उचित है।
ग्रंथायां (नामां आचार्य अर्धार्धार्थी अर्थार्थी बृत्तिजोशी रस्ती हती तेसाँ खाले कार्यने करिने के अंग (आचार्यां, सुधारकांग) नी स रूप हवांग छ। याहीनां आर्थीनां बृत्तिजोशी विशेष पारम्पर गर्ज। तेसाँ स्वत्बं हितांसे खरी श्री स्वाभाविक नारी आर्थीनां नारी दीक्षागी गणनायां धवन करिये। हेमीं आ वचन सांसारिणी सूर्यसिद्ध हुये हैं—के मातां! सूर्यसिद्धांनीवें श्री स्वाभाविकां आस्थादेश रूपांत रहस्य वाहनांने पाल साधना चेतना आचार्य अस्मथ हुये हैं, तो पछी दीक्षागीं तो देव साधनाच्या शाखां? शरदे के शाणां रोजो रूपांतररूपांतर देवमत्साय नये तो महा पाप लागे। जेव्ही सध्या अन्वेषा अर्धार्थी पहे। त्यांचे हेमीं खुश्क हैं—के सूर्यसिद्धांनीवें। आ धर्म करतोमे जवळ काळ्या छो, जेथे हेमीं खुश्क हैं। दीक्षागीं गणनात शरदे अर्धार्थी महा कहत हेंडे शिवांग छो तो भोसले शुभ्यांनी विशेष तर श्री स्वाभाविक अन्वेषा अर्धार्थी ही शालुण मानने महादर्शकांनी तो दीक्षागीं शुभ दर्शने। जेव्ही सध्या शहरी होणे हैं।

हेमीं अवश्य विशेष देखावत देखेते श्री आचार्य महादर्शको दीक्षागीं गणनायां शात्यात करी। दीक्षागीं पूरी शाय लां सुधी आचार्यांनी तप धर्मां अधिकारी बिधीं। जेने पातलांबां आगामी अन्य उठके के पातलांबां आगामी पाल जेनांमा। आ अभांमा हेमीं पाल संपूर्णू नीती महात करी। श्री दीक्षागीं विशेष रुढी महादर्शकसारो आ दीक्षागीं शुभ दर्शने। जेव्ही सध्या शहरी होणे हैं।

जोक वर्णते शासनदीनी की सुर-महाकायने कर्तु हैं-परंतु धर्म (दीक्षागीं अधिक) भार धन्यां शाय श्री आगामी छो, जेते हेमीं चोलांनी आधिकारी दृष्टीने आज्ञा, त्या जोक संवारां बरेंग आधिकारी हेमीं स्वत्बं हितांसे धर्मां, जोक इच्छां आधिकारी पाठवा, पूर्वां सूर्यसिद्धां श्री आगामी छो; परंतु शहरी होणे हैं। जोक इच्छां आधिकारी पाठवा, पूर्वां सूर्यसिद्धां श्री आगामी छो। जोक इच्छां आधिकारी पाठवा, पूर्वां सूर्यसिद्धां श्री आगामी छो। जोक इच्छां आधिकारी पाठवा, पूर्वां सूर्यसिद्धां श्री आगामी छो।
कीमत आकी शक्ता नथी, 'अक्टै आवदोजी जी धरेंछु लगनी आणण मुहुं को, अंते तेही सर्व जीवा पण्या कही ठीकी. राज्य पूर्ण दहने कहुं डॅट डॅट गहरा तपस्नी महाकाला आलुं के मूळ आक्षे ते आपने न हुंक आ बहु शुभक. आवदोजी कहुं-आणु मूल्य ने उप आपे ते अभारे प्रमाण को. अंके राज्ये बाह्यक पारस्पर समने वषाह लां चांस (टका) आपणया. पढी तेमें दीक्षणी तेमस वैमो वारे अदालेरा अनुद्धुने सुरून वेळेसंग. तेंमु पद्धत, वाचरेची, आशांती (आचारावल) केला आहे आध्या सही महाधर्मिय टय आवदोजी हवें अजगरी सुव्ययी टगे प्राप्ते आमर्याच्या महाकाल्याने आपो. आ प्रमाणे श्री सुधामध्यक अतिवेद एकटव्यक्त प्राप्त ताणयांचे सुरूशास्त्र चंदी नें, नते अजगरी दीक्षणी प्रमाणभाच्या थां.

दीक्षणी अनावरण नंतर सुरूरीती निरिखे आमर्याच्या पाकडा नवगांव पद्धती. उदारारो, परिस्थिती अने अतिशय आकार करती आमर्याचे महाकाल्याने होळ (रसलेख) राजस्थानी आमर्या बेहद तर लांगी. ते पुरे कहुं गोडी. कहुं वाणिज्य के-'सुरूशास्त्र उपोषण क्षेत्रकाळे सुरूप्त वेळा अर्थे. 'अ' आपणे लांकणात श्रीक ठेकेड़ व्याधिक अनेय को गोडीणीही कन्ध्यावणी सुरूलेले शपते घरेणकसार्व अनुदीक्षणी सुव्यया अनेक पराक्रमी धार्मिक अध्यय करू तत्पर अजगरी शुक्ले, तेही स्वप्न सुरूप्त अभारे अपने नें तथ्य करू तत्पर अजगरी शुक्ले. 'अ' आपणे लांकणात श्रीक ठेकेड़ व्याधिक अनेय को गोडीणीही कन्ध्यावणी सुरूलेले शपते घरेणकसार्व अनुदीक्षणी सुव्यया अनेक पराक्रमी धार्मिक अध्यय करू तत्पर अजगरी शुक्ले. 'अ' आपणे लांकणात श्रीक ठेकेड़ व्याधिक अनेय को गोडीणीही कन्ध्यावणी सुरूलेले शपते घरेणकसार्व अनुदीक्षणी सुव्यया अनेक पराक्रमी धार्मिक अध्यय करू तत्पर अजगरी शुक्ले.

॥ १० ॥ श्री भीमा श्री अभावक्षरितामा शंकरी के.
(पृ ४२३ व अनुसंधान)
चन्द्रकुण युक्त (हीता अभवा विशाले) भावानी पुजा-मिति मारे श्री विवेकानाथ कस्मातें मिन्न नारायणं, अन्तः तेनी साधारणनावचार १० श्री नवप्रितीर्षितम् अतिष्ठि करे हैं।

(34) १९

संवत् १२९६ आसान(श) वादि २ गुरु वीलिकानाहि सालह स्तंभः कारापित वरणः
संवत् १२८४ ना अपाद वादि २ ने अकुलारे; नीली, नारकी, संघ, अंबे राबं राखिये।

(अ ५)

संवत् १२४४ आसान || दि... ९ चरी श्रीमानमदेव ||
संवत् १२४४ ना अपाद...ऍक ५ ने शिवारे श्रीमचननाथ प्रि मिन्न नारायणं।

१० सिरिहा स्तेपां आनिधा ‘महार’ (महार) गान्ना नाम उपरीती लाभी
‘भजाल’ नामेने गण्य पदोऽणय प्रलय छ।
११ नामज्ञ अव, अप वाण। शिवारिमा, नागा (महानाव) पासे आनिधा
सेवारी गान्ना निभाविता।
१२ महार, महार, नागा, बेघर, अंदे, अने सेवारी। निभाविताना
शीतल में ‘प्रागीति देने में समध’ बाग भीणे वेदीमां घावार गया छ। तुझे
नहीं कर्मवेळा देने न प्रय: अहीं आभ्यासमां आल्मा।
श्रीवाण्डेवीस्तोत्र

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

संपादक

श्रीवाण्डेवीस्तोत्र

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज

श्री बलाचन्द्र सिंह महाराज
राजने श्रीमती देवता भारती, शारदेनुमुखाविश्वम विचरती।

मनुजस्वरस्तर कविता संक्षिप्ति, तारसूक्तितात्यासृजप्रेरणा।

चार्चूकुं तुकु तुकु दण्डना धर, के के गतीगत स्वरंजित जननमु।

मालसूक्तितात्यासृजप्रेरणा, कुन्तुण्डनारुवृक्षगोरुदुरु।

कु दुच्च विद्विविभैरी, शीतस्वरस्तर कविता।

शोभना लोकना लोकना नन्दिनी, कोमलतापपूर्वविशिष्टिनिनी।

कारकृत्रुक्तिकामिकां, सर्वविज्ञानविश्वारी परिधिता।

हस्तविन्यासस्राशा मालामानु, क्रक्षणेयिच्छाजातिभ्रीजुणा।

राजहस्साइनी विमाने स्थिरा, बीषणा तारिता फुस्तकाकारुक्ता।

भासरा सुत्रका पक्तिविशिष्ट, रुपरेखाप्रियद्विवीशिष्टिविशिष्टिविशिष्ट।

सर्वस्थाप्याम भूपिणा संविदा, कल्याणस्य तस्मादिसन्ति सर्व।

दत्तादेव विना देहिना कामिनी, कामिनी: कामिनी: कामिनी: कामिनी: कामिनी।

लालजुकामी(क्री) सुवर्णालिणी, श्रीसुखुतसावस्यसरस्त्रीकृष्णिनी।

मेश्वरस्वरूपेन भिमेने, सेवकदेवाने दण्डना श्रीमभ।

कर्म कं सीयने कर्म कं सीयने, कर्म कं वर्द्ध वर्द्ध कर्म कं दुर्द्वेश्व।

केन को वायुकेन को सावृत्त, केन को दीयने केन को जीयते

(केनरोजीहाथे)।

भारतीयस्तवपुरुषः स्त्रामिंद्र पुज्यर श्रीमभावने।

भपति सुरसुल्लोम मेघामान्यति चिरकालम्।

हृदि श्री वास्त्रदेवीस्तों संसुरूणम्।
અભિનંદન

શ્રી જેન સત્ય પ્રકાશના વિષય-દર્શન

 નેજ વર્ષમાં સમાન સમાન રણૂ કરીએ

લવાજન

સ્થાનિક - માસ ૧-૮-૦, આધ્યાત્મ - માસ ૨-૦-૦

મીઠ વર્ષના આખીને લાલ

કરિતક શુભકલા પ ને હથીના "શ્રી મહાવિર નિર્વાચિત વિષયશીલ" લેત

For Private And Personal Use Only
“શ્રી નૈતિક પ્રકાશના પ્રથમ વર્ષવાળનું વિશેષ-દર્શન”

પ્રથિભા-વિજ્ઞાન

સઃપ્રેમની હરિયાણન (અલુ કેષ્મરાના) : અભયાંશ મહારાજ શ્રી સાસગાર સુખેલિક, 82, 125, 147, 162, 228, 277, 55, 14, 85, 132, 143, 209, 243, 282, 136, 343, 507 (સાક્ષર).


વિશેષ સમીક્ષા (આલુ કેષ્મરાના) : અભયાંશ મહારાજ શ્રી વિજ્ઞાન-વિજ્ઞાન સુખેલિક (૧ મ. સ્થાનપ્રવાસી) : 8, 14, 52, 132, 143, 209, 243, 282, 136, 343, 507 (સહ્ય).


સંસ્થાનની સંત્રાસી માટે કુલ પ્રથમ : મુનિરાજ શ્રી માનસસનીજી : 1500

નામથી કમાવવાનું અને મેળવવાનું : મુનિરાજ શ્રી નિવાદાનિવાદ : 1500

તાલીમન-સિવિશા

થનાવ : શ્રીસુર મહારાજ અંગરેજી સાહિત્ય સ્થાયીની સંપ્રદાયક : 24

સ્વરમજા : શ્રીસુર મહારાજ અંગરેજી સંપ્રદાયક : 218

સાધનીવાસ : સિલેલાબાસ શ્રી મધ્યમાસ શ્રીસુર મહારાજ અંગરેજી : 234

સંગ્રહારથી અભ્યાસ : 230 સ્થાનની નિવાદ : 234

સાહિત્ય-વિજ્ઞાન

અમીર સાહિત્યની સંપ્રદાયક : મુનિરાજ શ્રી દર્શનકશ્યપ : 18, 81

મેળવ અંગરેજી સંપ્રદાયક નામનિર્દેશ : શ્રીસુર શ્રી મધ્યમાસન સાહિત્ય મેળવાની આચાર્ય મેલા : 183

અમીરના સંગ્રહ : મેળવાની અમારા સાહિત્ય : 444, 482

મેળવાની અમારા સાહિત્ય : મેળવાની અમારા સાહિત્ય : 154

ધન સમાચાર, શીષ્ય અને શિક્ષાયુદ્ધ-સિવિશા

સમાચાર, શીષ્ય અને શિક્ષાયુદ્ધ-સિવિશા : 20

દ્રાક્ષણા (કમશા) : શ્રીસુર મહારાજ અંગરેજી સંપ્રદાયક : 20

દ્રાક્ષણા (કમશા) : શ્રીસુર મહારાજ અંગરેજી : 20

શ્રીસુર મહારાજ : મુનિરાજ શ્રીસુર મહારાજ : મુનિરાજ શ્રીસુર મહારાજ : 28, 112, 144, 158 (સહ્ય).
सरस्वती-पूजा अने वैने : (तालुक लेखमाणा) : श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी 
78, 192, 214, 215, 216, 217, 218, 219 (तालुक)

terma सैंडाली जो जिनाशृंखला पुभात्से उपयुक्त: श्रीमहाविन श्री बालागंगा 
भंडारी: 78

प्रतिमा अध्ययन : श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 216
माहिती श्रीयोगी: 217
श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 218

महादेव भगवान जी : कपिलजी श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 219

आचार्य जी दादाजी : कपिलजी श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 220

विषय: श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 221

ग्रंथ: 216

संस्कृत-स्थानावलिक

पूर्वाध्याय: श्री महावीर स्वामी (प्राकृत) २६, 

terma सैंडाली जो जिनाशृंखला पुभात्से उपयुक्त: श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 222

आचार्य जी दादाजी: कपिलजी श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 223

संस्कृत: 224

यूनिवर्सिटी-थेवा-विपणक

महादेव भगवान जी: कपिलजी श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 225

संस्कृत: 226

श्रीमहाविन श्री बालागंगा भंडारी: 227

संस्कृत: 228
હળધાર નિવેષણક !] "શ્રી જીન સત્ત પ્રકાશ" [આખ્યાને નથી! \n\nશ્રી રાજનગર (અમહાનામાં) શિલ્લા\nશ્રી મહાવિદ્યાલય સાંભળામાં શુભ્રપાલ મૂલ્યો વિશેષ સવાધન સાંભળતા હતા\n\n"શ્રી જીન સત્ત પ્રકાશ" ના\nઆગ્યા જાનાંખરી - કાર્તિક શુક્લા પાંચમી - ના યંક\n\n"શ્રી મહાવિદ્યાર નિવૃત્ત વિશેષણ"\n\ntàરીકે પ્રભાટ કરી\n\nશ્રી હળધાર અંદાજમાં પરસ્પરી સહાયની દેવ સંજીવી, લિંગનન વિદ્યાના અનત મહારાં કેનેની સંઘ્ય અભિવાદના આવશે.\n\nઆ હળધાર અંક\n\n"શ્રી જીન સત્ત પ્રકાશ"ના આપેલા આલુ વર વાતીમાં\n(ઈ વારની માટ તમે જ લેખી છે)\n\nનથી અભિવાદના આવશે!\n\nઆ અંકેલ છેટક સૂપ્ય 0-12-0 (પાશેલ પાંચ લુઠર) રાજબા આવશે.\n\nશેલી છેટક સારક થયા લખિયા હોવ તમણે દુસ્રી દાખલા શુભ્રે પાંચમી\nપહેલા ચોટાં નામ લાગી રજમાં શેલી તે મારે સંવેદના થઈ શકે.\n\nમાટ તમે લેખી કેટલી નવા રચના આ હળધાર વિશેષણ ઉપરાંત\nઆ પ્રદેશની શીલ અગ્રયાર અંકેલ સાગર 500 પાન કેટલા, વિદ્યાસાહી\nવાંચન ગેયવાં હોય તે આકૃત થયા મારે તસ્તા જ લખે. --\n\nશ્રી જીનધરં સત્ત કારાસાક સભ્યતિ\nકર્મિનાખાની વારી, ધીકાણા\nઅમહાનામાં (અખીરત)
Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra

Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only
आटसां यां श्रावणे!

स्वाति ज्ञान पंथभी-क्षतिक शुल्क पंथभी

"श्री ज्ञेन सत्य प्रकाशी"

ना आंक्य

"श्री महावीर निर्वाणु विशेषांक"

तरीके पक्त थारे

अने

ओ हं द्यानां आंक्य

"श्री ज्ञेन सत्य महाशी" ना

उल्लेखने सेट मधुष

(अ विशेषांकती शेल्मन्आ आंक्य वाणी)

ओ हं द्यान हं प्राणावरा माटे

अाने 0 आह थापि मारे लणा -

श्री ज्ञेनांमें सत्यप्रकाशक समिति

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KEMORA
Koba, Gandhinagar - 382 007.
Ph.: (079) 23276252, 23276204-05
Fax: (079) 23276249

मुख्य: आलंकार अखण्डकार रामाजी, भोपुर, भोपुर, अखण्डकार.